प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करना
सत्र 26: शिष्यत्व की गतिशीलता (11b)

रॉन लाइवली, एम.डिव., एम.ए. द्वारा प्रस्तुत – BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: हर व्यक्ति स्मृति श्लोक उद्धृत करता है: छंद चरण: **1 कुरिन्थियों 2:12**
12 अब हमें संसार की आत्मा नहीं मिली है,
बल्कि वह आत्मा जो परमेश्वर से है,
ताकि हम उन चीज़ों को समझ सकें जो परमेश्वर ने हमें स्वतंत्र रूप से दी हैं.

चरण 3: *बाइबल अध्याय के पूरे या कुछ हिस्से को पढ़ें और चर्चा करें* - **1 कुरिन्थियों 2**
लिंक: https://www.biblegateway.com/passage/?search=1%20Corinthians%202&version=ESV

चरण 4*:* व्यक्तिगत आवेदन और/या समूह चर्चाओं के लिए प्रश्न:

एक. **ध्यान**: यह चिंतन और भक्ति के माध्यम से परमेश्वर और उसके वचन (यीशु और शास्त्र) के प्रति प्रेम के माध्यम से किया जाता है। आप शास्त्र या "इम्मानुएल" जैसे किसी अवधारणा का उपयोग कर सकते हैं – हमारे साथ परमेश्वर।

दो. फिलिप्स कहते हैं कि ध्यान व्यक्ति के मन को परमेश्वर पर केंद्रित करता है, जो हमारी शक्ति हैं। भय पर ध्यान देना चिंता और चिंता की ओर ले जाता है, जबकि परमेश्वर को एक प्रेमपूर्ण पिता के रूप में और उनकी शक्ति पर ध्यान करने से उनकी पुकार/आदेश के प्रति आज्ञाकारिता उत्पन्न होती है।

*तीन.*याद करने और ध्यान लगाने के लिए एक महत्वपूर्ण अंश फिलिप्पियों 4:6-7 है। यह मुझे व्यक्तिगत रूप से 40 वर्षों से अधिक समय से मदद करता रहा है।

चार. **शिक्षाएँ**: हमें वही सिखाना है जो दूसरों ने हमें सिखाया है ताकि हम दूसरों को सिखा सकें कि वे हर मनुष्य को मसीह में पूर्ण रूप से प्रस्तुत करें।

पाँच. लेखक कहते हैं कि हमें अपने शिष्यों को व्यवस्थित रूप से ऐसे सिद्धांत सिखाने हैं जो उन्हें मसीह में परिपक्व होने में मदद करें।

चरण 5*: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*
लेखक के अनुसार अध्याय 11b – कीथ फिलिप्स:

ध्यान

ध्यान का अर्थ है ईश्वर की चेतना की ओर प्रयास करना, चिंतन और भक्ति के माध्यम से उसकी निरंतर जागरूकता (भजन संहिता 1:2)। यह आपके परमेश्वर के वचन के प्रति प्रेम का स्वाभाविक परिणाम है (भजन संहिता 119:47)। ध्यान आपको परमेश्वर की उपस्थिति में अलग-थलग कर देता है और वह शांति, विश्वास और सुकून उत्पन्न करता है जो केवल उन्हीं में मिलती है।

एक रात जब मैं मिडवेस्ट में था, मैरी थीसेन ने मुझे लॉस एंजिल्स से फोन किया। कुछ गैंग सदस्यों ने उसे बलात्कार और हत्या की धमकी दी थी। मैं तुरंत घर आना चाहता था ताकि उसे सांत्वना दे सकूं और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित कर सकूं, लेकिन यह असंभव था। इसलिए, मैंने उसे बताया कि इम्मानुएल शब्द "हमारे साथ परमेश्वर" पर ध्यान लगाकर मुझे अक्सर शांति मिली है। मैंने मरियम को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। मरियम बताती हैं, "मैंने अगले कुछ दिनों में इम्मानुएल के बारे में अनगिनत बार सोचा और अंततः शांति का अनुभव किया। और अब भी जब हम खतरे में हैं, इम्मानुएल पर ध्यान करने से शांति और आत्मविश्वास मिलता है।" परमेश्वर के वचन पर चिंतन ने यिर्मयाह की कड़वाहट और अकेलापन को आनंद में बदल दिया (विलाप 3:18-23)। हम परमेश्वर के वचन पर ध्यान करते हैं ताकि हम "सभी संतों के साथ यह समझ सकें कि चौड़ाई और लंबाई क्या है, और मसीह के प्रेम को जान सकें जो ज्ञान से परे है ..." (इफिसियों 3:18,19)।

अपने शिष्य को सिखाएं कि उसके भय और परिस्थितियों पर ध्यान केंद्रित करना चिंता और चिंता की ओर ले जाता है, जबकि ध्यान उसका मन परमेश्वर पर केंद्रित करता है, जो उसकी शक्ति है (भजन संहिता 46:1)। चूंकि हम जो सोचते हैं उससे गहराई से प्रभावित होते हैं, ध्यान आज्ञाकारिता (भजन संहिता 119:15) और आनंद (यिर्मयाह 15:16) उत्पन्न करेगा। किसी पद पर ध्यान लगाएं जिसे आपने याद कर लिया हो। मैं दो तरीके सुझाना चाहता हूँ जो आपको अपने शिष्य के साथ ध्यान शुरू करने में मदद करेंगे।

1. श्लोक के बारे में कुछ आवेदन प्रश्न पूछें:

यह पद मुझे परमेश्वर के बारे में क्या बताता है? यह पद और कौन सा सत्य सिखाता है? क्या कोई आदत है जिसे मुझे छोड़ देना चाहिए या कोई अभ्यास शुरू करना चाहिए?

2. याद किए गए किसी पद को कई बार जोर से दोहराएं। हर बार एक अलग शब्द या वाक्यांश पर जोर दें। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 15:16 में: मैंने तुम्हें चुना कि जाओ और फल देओ। मैंने तुम्हें चुना कि जाओ और फल देओ। मैंने तुम्हें चुना कि जाओ और फल देओ। मैंने तुम्हें चुना कि जाओ और फल दे। मैंने तुम्हें चुना कि जाओ और फल देओ। मैंने तुम्हें चुना कि जाओ और फल देओ। मैंने तुम्हें चुना कि जाओ और फल देओ।

इस पद में हर जोर से मिलने वाली सच्चाई और नई अंतर्दृष्टि का आनंद लें। अपने विचार एक-दूसरे के साथ साझा करें।

शिक्षाएँ

मसीह ने अपने शिष्यों को निर्देश दिया कि वे लोगों को सिखाएं "जो कुछ भी मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, उसका पालन करें।" पौलुस ने "परमेश्वर का पूरा उद्देश्य" सिखाया (प्रेरितों के काम 20:27)। उन्होंने लिखा, "और हम उसे घोषित करते हैं, हर मनुष्य को चेतावनी देते हुए और हर मनुष्य को पूरी बुद्धि से सिखाते हुए, ताकि हम हर उस मनुष्य को मसीह में पूर्ण रूप से प्रस्तुत कर सकें" (कुलुस्सियों 1:28)।

अपने शिष्य को बाइबल सिखाओ।

जब यीशु ने "उनके मन को शास्त्रों को समझने के लिए खोला" (लूका 24:45), तो उन्होंने अपने शिष्यों को "मेरे मेमनों को खिलाने" का निर्देश दिया (यूहन्ना 21:15-17 KJV)। परमेश्वर के "जीवित और सक्रिय" वचन से अधिक पोषणकारी क्या हो सकता है (देखें इब्रानियों 4:12)? यहाँ परमेश्वर स्वयं को और अपनी इच्छा को मनुष्य के सामने प्रकट करता है (नीतिवचन 2:1-5)। वचन के पास उसी उत्साह के साथ आओ जैसे भजनकार करते हैं: "मेरी आँखें खोलो, ताकि मैं तेरी व्यवस्था से अद्भुत वस्तुएँ देख सकूँ" (भजन संहिता 119:18)। तुम्हारे पाठ सटीक और व्यावहारिक होने चाहिए। अपने शिष्य को व्यवस्थित रूप से शास्त्रीय सिद्धांत और सिद्धांत सिखाओ जो उसे मसीह में परिपक्व होने में मदद करें। उसे बाइबल की सच्चाई को लगातार लागू करने के लिए शास्त्र का कार्यशील ज्ञान होना चाहिए। यीशु एक उत्कृष्ट संचारक थे। उन्होंने अधिकार के साथ पढ़ाया (मत्ती 7:29) और लोग "उनकी बात सुनना पसंद करते थे" (मरकुस 12:37)। कुछ ने कहा, "... क्या हमारे दिल हमारे भीतर जल रहे थे जब वह हमसे बात कर रहे थे... जब वह हमें शास्त्र समझा रहे थे?" (लूका 24:32)।

अपने शिष्य की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए, आपको अच्छी तरह से तैयार होना चाहिए और निम्नलिखित शिक्षण सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। रचनात्मक बनें। यीशु ने औपचारिक संदेशों को अनौपचारिक बातचीत के साथ कुशलता से जोड़ा। उन्होंने व्याख्यान और चर्चा दोनों की, वास्तविक जीवन के उदाहरणों जैसे सिक्के, लिली, बीज और मिट्टी का उपयोग करके गहरे सत्य दिखाए। शिष्य कैसे कभी मसीह की शक्ति और विश्वास के पाठ को भूल सकते थे जब उन्होंने अंजीर के पेड़ को श्राप दिया (मत्ती 21:19)?

विविधता रुचि बनाए रखने में मदद करती है। पुस्तक और विषयगत अध्ययन के बीच बारी-बारी से जाएं। जहाँ आप मिलते हैं वहाँ समय-समय पर बदलें। कभी-कभी अपने शिष्य को आपको सिखाने दें। यह उसे सिद्धांतों को अधिक गहराई से समझने में

मदद करेगा और दूसरों को सिखाने में सक्षम बनाएगा। यह आपको सामग्री की उसकी समझ का मूल्यांकन करने में भी मदद करेगा। अपने शिष्य को अध्ययन करते समय शामिल करें। वह आपके साथ अध्ययन करके बेहतर सीखेगा बजाय व्याख्यान सुनने या अकेले अध्ययन करने के। बाइबिल के सिद्धांतों को अपनाएं और साथ में व्यावहारिक अनुप्रयोगों में शामिल हों। उसे यह देखना चाहिए कि आप जो कुछ पढ़ा रहे हैं उसके लिए उतने ही भूखे हैं जितना आप उससे उम्मीद करते हैं।

महत्वपूर्ण पाठों या सिद्धांतों को दोहराएं। पौलुस ने कहा, "... वही बातें फिर से लिखना मेरे लिए कोई परेशानी नहीं है, और यह तुम्हारे लिए एक सुरक्षा है" (फिलिप्पियों 3:1)। पतरस ने घोषणा की, "इसलिए, मैं हमेशा तुम्हें इन बातों की याद दिलाने के लिए तैयार रहूँगा, भले ही तुम उन्हें पहले से जानते हो..." (2 पतरस 1:12)। लचीले बनें। आपको अपने शिष्य की तत्काल आवश्यकताओं को पूरा करने और शिक्षण के लिए एक निश्चित रणनीति अपनाने के बीच एक नाजुक संतुलन बनाना होगा। यह अक्सर उस दिन के पाठ के सिद्धांतों को अपने शिष्य की आवश्यकताओं पर लागू करके किया जा सकता है।

पृष्ठ 121-124a

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें, फिर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की मांगों के लिए प्रार्थना करे।*

स्रोत: डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल। प्रकाशक: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1981। ISBN 0-8007-1181-5। परिचय: रॉबर्ट ई. कोलमैन। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) पुस्तक से बिना संशोधन के ली गई है।

संशोधित 20261123